भूमि की विभिन्न श्रेणियों के लिए उपयुक्त फसलें

1243. **श्री राम जेठमलानी :**
श्री दिनेश गोस्वामी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश के कृषि भूमि का अधिकतर भाग पूरी तरह से मानसून पर निर्भर है ;

(ख) क्या यह सच है कि देश में कतिपय भागों में अतिवर्षा, कहीं पर्याप्त वर्षा होती है जबकि कुछ भागों में न्यूनतम वर्षा होती है ;

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार ने ऐसे क्षेत्रों का पता लगाया है और यदि हां, तो विभिन्न श्रेणियों में कितने एकड़ कृषि भूमि आती है; और

(घ) क्या सरकार ने भूमि की प्रत्येक श्रेणी के लिए विभिन्न लाभप्रद और अधिक उपज देने वाली फसलों का पता लगाया है ; और यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ; और यदि अभी तक कोई सूचना एकत्र नहीं की गयी है तो सरकार इस संबंध में कब तक कार्यवाही करेगी ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री जयन्तीलाल वीरचन्दभाई शाह) : (क) और (ख) जी, हां।

(ग) और (घ) वर्षा, तापमान, जल-संसाधन, मिट्टी की किस्म आदि जैसे कृषि जलवायवीय कारकों को ध्यान में रखते हुये देश को 15 जोनों में विभाजित किया गया है । इन पन्द्रहों जोनों के भौगोलिक क्षेत्रों और उनके लिये अभिज्ञात की गयी विभिन्न लाभप्रद और अधिक उपज देने वाली फसलों को दर्शाने वाला एक विवरण संलग्न है ।

विवरण

15 कृषि जलवायुवीय जोनों के भौगोलिक क्षेत्रों और उनके लिए अभिज्ञात की गयी विभिन्न लाभप्रद और अधिक उपज देने वाली फसलों को दर्शाने वाला विवरण

क्रम सं०	कृषि जलवायुवीय जोन	भौगोलिक* क्षेत्र (000' वर्ग कि०मी० में)	अभिज्ञात की गयी फसलें
1	2	3	4
1.	पश्चिमी हिमालय . .	245	गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार, तोरिया, गन्ना जौ एवं आलू
2.	पूर्वी हिमालय . .	275	चावल, मक्का, तोरिया, जूट, गेहूं, आलू, रागी, तिल एवं गन्ना
3.	निचले गंगा के मैदान .	69	चावल, तोरिया, जूट, गेहूं, आलू, एवं तिल
4.	मध्यवर्ती गंगा के मैदान .	162	चावल, गेहूं, मक्का, गन्ना, जूट, चना
5.	ऊपरी गंगा के मैदान .	143	गेहूं, चावल, मक्का, तुर, गन्ना, बाजरा एवं आलू

1	2	3	4
6.	गंगा पार के मैदान	125	चावल, गेहूं, मक्का, गन्ना, बाजरा, कपास एवं चना
7.	पूर्वी पठार एवं पहाड़ियां	395	चावल, गेहूं, मक्का, रागी, मूंगफली, रामतिल, लिनसीड, ज्वार एवं चना
8.	मध्यवर्ती पठार एवं पहाड़ियां	375	चावल, ज्वार, गेहूं, चना, मक्का, बाजरा, तोरिया, तुर, रामतिल, सनई, सोयाबीन, एवं तिल
9.	पश्चिमी पठार एवं पहाड़ियां	332	ज्वार, कपास, गेहूं, चना, बाजरा, चावल, मूंगफली एवं तुर
10.	दक्षिणी पठार एवं पहाड़ियां	394	मूंगफली, ज्वार, चावल, कपास, बाजरा, रागी, अरण्डी एवं मक्का
11.	पूर्वी समुद्र तटीय मैदान तथा पहाड़ियां	192	चावल, मूंगफली, बाजरा, कपास, रागी, ज्वार, पटसन, रामतिल, तम्बाकू एवं गन्ना
12.	पश्चिमी समुद्र तटीय मैदान एवं पहाड़ियां	114	चावल, रागी, टोपिओका, मूंगफली, केला, ज्वार, तिल एवं सनई
13.	गुजरात के मैदान एवं पहाड़ियां	196	कपास, ज्वार, बाजरा, मूंगफली, गेहूं, चावल, रागी, गन्ना, तुर एवं मक्का
14.	पश्चिमी बारानी भूमि	175	बाजरा, चना एवं तोरिया
15.	द्वीपसमूह	8	—

टिप्पणी :—भौगोलिक क्षेत्र जिला स्तर के रिपोर्टिंग क्षेत्र के जोनों का पुर्नसारणीकरण पर आधारित है। अतः ऐसे क्षेत्र जहां से परिणाम नहीं आये हैं तथा चीन और पाकिस्तान द्वारा अनधिकृत क्षेत्र इसमें शामिल नहीं है।

स्रोत : एग्रो–क्लाईमेटिक रिजनल प्लानिंग — एन ओवरव्यू (योजना आयोग)

दिल्ली में सहकारी आवास समितियों के लिए भूमि की आवश्यकता

1244. **श्री राम जेठमलानी :** क्या शहरी विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली में वर्ष 1983 में लगभग 1,406 सहकारी आवास समितियां पंजीकृत की गई हैं ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि केवल 320 पंजीकृत समितियों के संबंध में ही भूमि आबंटित करने के निर्णय को क्रियान्वित किया जा रहा है ;

(ग) यदि हां, तो शेष समितियों को कब तक भूमि आबंटित किये जाने की संभावना है ; और

(घ) इन शेष समितियों के लिए कुल कितनी भूमि की आवश्यकता का अनुमान है और क्या प्रशासन ने दिसम्बर 1990 तक इतनी भूमि आबंटित कर दी थी ?

शहरी विकास मंत्री (श्री दौलत राम सारण) : (क) से (घ) दिल्ली में 1983 में 1427 सहकारी सामूहिक आवास समितियां पंजीकृत की गई है। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने 1983 से पूर्व पंजीकृत 518